रुकमा

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः वंदना बिष्ट

कथा की ३००एम थिंकबुक

मैं हर रोज एक सपना देखती हूँ
लहरों के बारे में,
जो मेरी दोस्त हैं !

मैं खड़ी हूँ
5
मैं
चल रही हूँ
6

मैं तैरती हूँ
मैं उछलती हूँ!

मैं उड़ती चली!

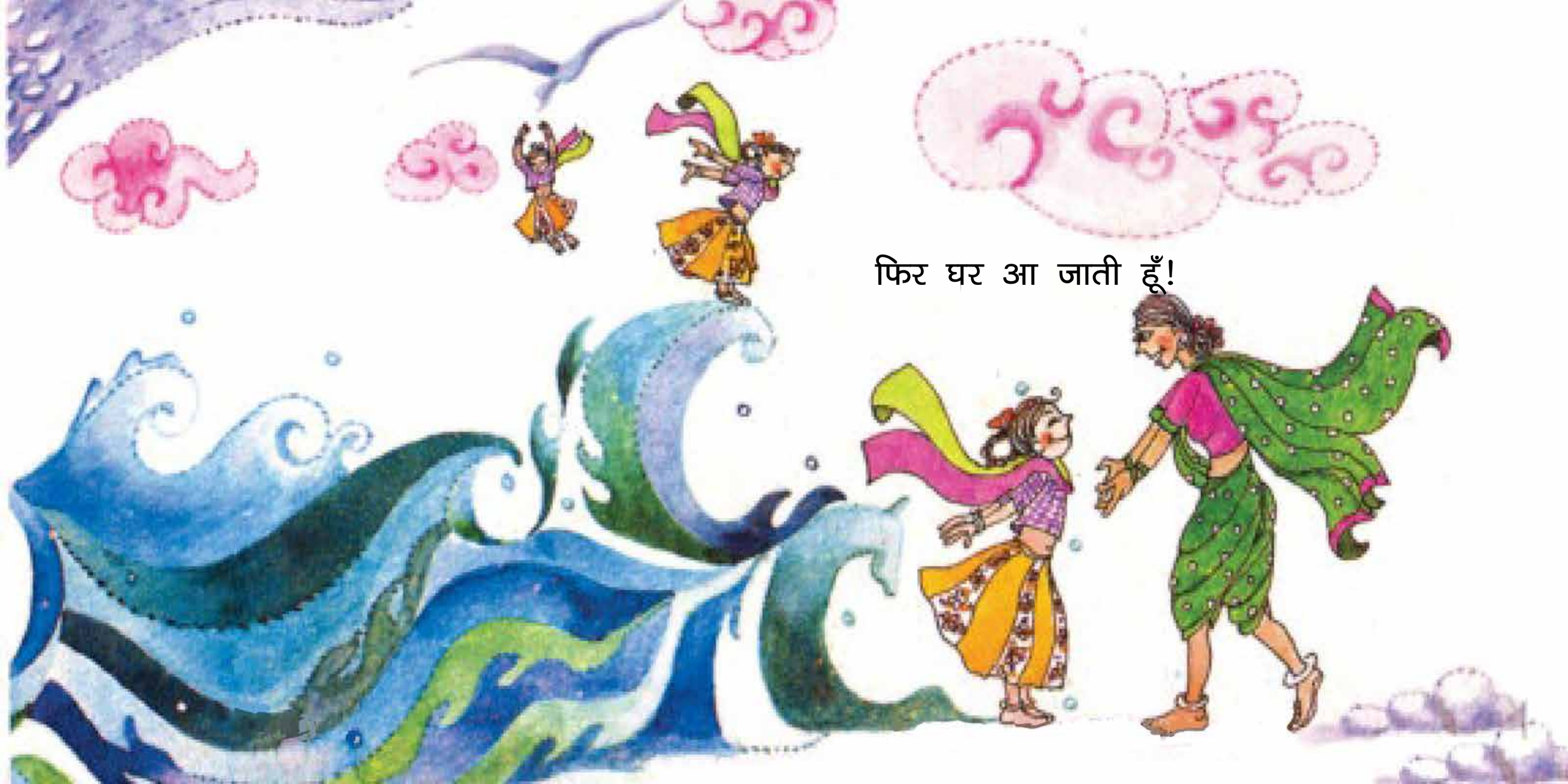

फिर घर आ जाती हूँ!

रुकमा एक कोली है।

मैं कोली समूह से हूँ।
मछली पकड़ना, बेचना
और पैसे कमाना
मेरा काम है।
इसलिए मुझे खुशी होती है।
मेरा परिवार भी सुखी है।

मुझे मछलियाँ बहुत पसंद है
मैं अरब सागर से मछलियाँ पकड़ती हूँ।
अरब सागर मुंबई के पास है।
अरब सागर दुखी है।

वह बहुत गन्दा हो गया है।
इतना की क्या बताऊँ!
स्कूल के बच्चे बहुत होशियार होते हैं!
क्या तुम हमारी मदद करोगे अच्छा जीवन
जीने में?

Rukma lives near the Arabian Sea in a place called Mumbai.

सागर बहुत बड़ा होता है।
दूर-दूर तक फैला हुआ!
इसमें बड़े से बड़े जीव होते हैं।
छोटे से छोटे जीव भी होते हैं।

सागर तरह-तरह के जीवों का घर है। जैसे कछुए, सील, घड़ियाल, समुद्री घोड़ा और बहुत सारे!
बड़े सागरों को
महासागर कहते हैं।

रुकमा का सपना

मैं एक
मरीन
बायोलोजिस्ट
बनाना
चाहती हूँ।

बोलो
म–री–न
बायो–ल–जिस्ट

सागर और सागर के जीव को
जानना चाहती हूँ।
सागर में मछलियों की तरह तैरना
चाहती हूँ।
सागर में रहने वालों की फोटो
लेना चाहती हूँ।
मैं महासागर बचाना चाहती हूँ।

जब आप बड़े होगे
तो, क्या ठीक करना
चाहोगे ?

गीता धर्मराजन को बच्चों के लिए कहानियां लिखना पसंद है। वह बच्चों की पत्रिका टारगेट की सम्पादक थी। वह पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका – पेनसिलवेनिया गैजेट की भी संपादक थी। उन्हें 2012 में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

वंदना बिष्ट प्रसिद्ध कलाकार और लेखक हैं। उन्हें उनकी कला की बारीकियों के लिए जाना जाता है। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1991, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी एलिफेंट श्रृंखला में आनंद और समझने के लिए पढ़ो

FOR OUR BOOKS

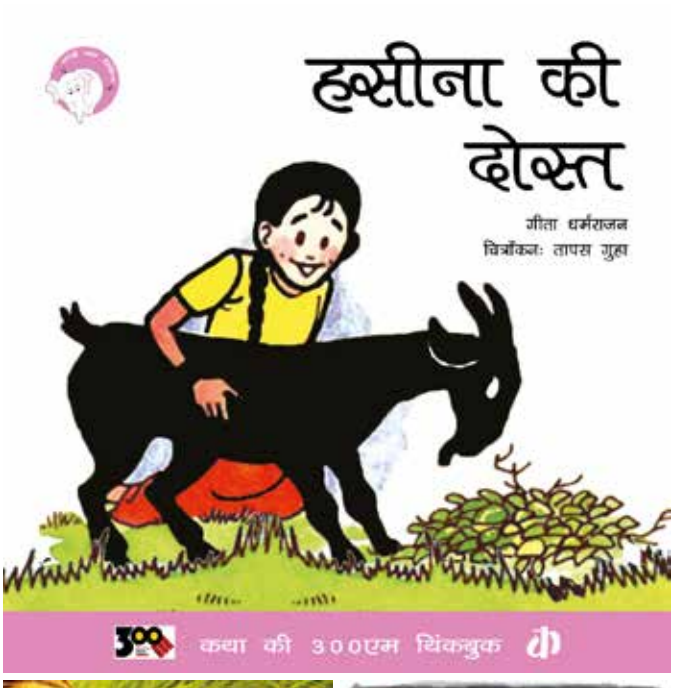

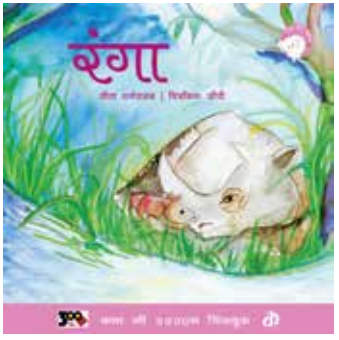

www.books.katha.org

"An institution in the world of Indian literature."

— The Business Standard

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

www.katha.org

₹ xxx